

## विषय सूची

## सम्पादकीय

01. सम्पादकीय..... 01  
 02. प्रवचन ब्रह्मलीन सदगुरुदेव  
 स्वामी अलखानंद जी महाराज..... 02  
 02( 1 ) भजन—अन्तर जोत जगाई..... 04  
 02( 2 ) मानुष जन्म की मौज..... 07  
 03. Dhammapada..... 11  
 04. अलख होम्यो कलिनिक..... 12  
 05. गुरु वचन ए वचन..... 13  
 06. गफलत की निद्रा से जागो..... 14  
 07. स्वस्थ जीवन की कला..... 15  
 08. त्रिदशक सूचना..... 16  
 09. सतसंग सूचनाएं..... 16

## अलखादेश मासिक पत्रिका

The Practical Message of God.....



अलख अमर विवेचन प्रत्यक्षालय  
 सिद्ध झण्डी, फगवाड़ा रोड, माहिलपुर ( होशियारपुर )  
 पिन-146105

website:-aavpashram.com

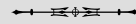
Email- aavpmahilpur@gmail.com

\*\*\*

### जाको कछु न चाहिए सो ही शहनशाह

प्रिय पाठकगण,  
 जीवन को बारीकी से देखने पर एक बात तो स्पष्टतया समझ आती है कि जीवन में कोई न कोई मांग सदैव बनी रहती है। अंतर्मन सदैव कुछ न कुछ मांग रखे रखता है पर जब जीवन में पूर्ण संतोष घटित हो तब जो आनंद प्राप्त होता है वह अनेकानेक सम्पदा, महल भवन आदि में नहीं। जब प्रभू से भी कुछ चाहने की मांग खत्म होती है तो निकलता है परमानंद।

एक बार शेख अब्दुल्लाह नामक व्यक्ति के घर एक-एक करके बारह बच्चे पैदा हुए जिन सबका नाम उसने इस प्रकार रखा कि जिनके अंत में अल्लाह शब्द आये जैसे इनायतुल्लाह उमर अब्दुल्लाह आदि। पर कभी उसके तेरहवां बच्चा भी पैदा हो गया अब उसे कोई नाम न सूझा तो वह पहुंचा मियां नसरूदीन के पास और बोला, “मियां कोई नाम तो बता जो अल्लाह पर खत्म हो।” यह सुनकर नसरूदीन बोले, “इसका नाम रखो “बस कर अल्लाह” ताकि अब सब मांगे खत्म हो जाएं।” कहानी में हंसी है पर वास्तविकता को समझने पर गंभीरता उत्पन्न होगी व यात्रा शुरू होगी।



MH-89

## प्रवचन ब्रह्मलीन सद्गुरु देव स्वामी अलखानन्द जी महाराज

माहिलपुर के नगर निवासी, भगवद भक्त प्रेमी सज्जन जानते ही हैं कि जब हम कुछ वर्ष पहले, आप के इस नगर में आए थे, तो क्या साथ लाए थे, यदि कोई बाहरी वस्तु देखोगे तो तीन कपड़े भगवें और हाथ में हैंड बैग छोटा सा, सम्भव है दो पाँच सात रूपये भी होंगे और आए भी दो दिन के लिए थे, अभी वो दो दिन पूरे नहीं हुए शायद कब होंगे। जरा इस प्रकार से देखो बाहरी दिखावा तो मात्र यही था पर कुछ विशेष वस्तु बहुत विशेष वस्तु साथ लाए थे। वो वस्तु सुगन्धित है, आरामदायक है, सब को आनन्द, परमानन्द में ले जाने वाली और सब को एक करने वाली, भेद-भाव, जात-पात, रंग-नसल इत्यादि-इत्यादि से दूर रखने वाली क्योंकि एक परमात्मा ने, पार ब्रह्म परमेश्वर ने सारे विश्व को बनाया, वो सारे विश्व में एक ही बैठा है दो नहीं।

जो एक बैठा है उस का सन्देश ही यहाँ आकर सबसे पहले दिया था और आज भी वो ही सन्देश दे रहे हैं। जिन लोगों को बात समझ में आ गई वो ज्ञान प्राप्ति के पश्चात् अर्थात् तथ्य यानि सार जानने के बाद अब ध्यान करते हैं (किस का? यानि पार ब्रह्म परमेश्वर का) और आनन्द ले रहे हैं। पर जिन्हें बात अभी तक समझ में नहीं आई हमारी तरफ से तो एक ही इच्छा है, क्या? हे प्राणी मात्र सब ध्यान करो—स्त्री या पुरुष, बच्चे या बूढ़े, अमीर या गरीब हों, हमें कोई आपत्ति नहीं। सारे धर्म एक बात जरूर कह रहे हैं क्या? परमात्मा का ध्यान करो, ईश्वर का, ब्रह्म का ध्यान करो, तुम निर्गुण मानते हो या सगुण मानते हो, तुम देवता के रूप में

मानते हो या पुस्तक के रूप में मानते हो, तुम यहाँ मानते हो कि वहाँ मानते हो, किसी भी प्रकार से मानते हो परन्तु हमारा तो सन्देश सब को एक ही है कि परमात्मा तेरे अन्दर बैठा है, पहले तेरे अन्दर है फिर कहीं और-कहीं भी कहाँ, कोई जगह खाली नहीं पर तेरे घट में पहले है।

तुम चाहे कोई भी काम करते हो, तराजू लेकर तोलते हो अर्थात् दुकान-दारी करते हो तो कोई बात नहीं, पाठशाला में शिक्षा देते हो बन्दूक धारण किए हुए देश की सुरक्षा में दूरो दराज कहीं भी गए हो तो कोई बात नहीं मत सोचना कि परमात्मा का ध्यान या सिमरण नहीं हो सकता। यह भी मत सोचना कि तुम जितने यहाँ बैठे दिखाई दे रहे हो, उतने ही आनन्द ले रहे हैं बल्कि दूरो दराज तक प्रेमी ज्ञान लेकर चले गए हैं वहाँ भी उन को सत्संग पहुंचता है वो भी प्रेमी श्रद्धा (अकीदत) लेकर जाते हैं और आनन्द विभोर होकर जाते हैं। जो बीज बोए थे वो तुम्हारे सामने हैं, क्या प्रेम, क्या आनन्द, हटाए नहीं हटते—आज्ञा में रहना पड़ता है। सुगन्ध बोई थी तो सुगन्ध है, एकता बोई थी तो एकता है। एक क्या? यह ज्ञान करवाया था किस को, जिस को यह प्रिय लगा, और समझ कब आई जब दिव्य नेत्र यानि तीसरी आँख खोली। भगवान कह रहे हैं:—

**न तु मां शक्यसे द्रष्टुमनेनैव स्वचक्षुषा।**

**दिव्यं ददामि ते चक्षुः पश्य मे योगमैश्वरम्॥**

ददामि यानि देता हूँ, क्या? दिव्य चक्षुः चक्षु यानि आंख, दिव्य नेत्र, (Divine Eye) या ज्ञान अन्जन देता हूँ ऐसा भगवान कह रहे हैं कि

“प्राकृतिक नेत्रों द्वारा भगवान के प्रभाव को और योग शक्ति को नहीं देख सकता और जब तक दिव्य अर्थात् आलौकिक चक्षु न मिले, न खुले” इस प्रकार से क्या किया? क्या विशेष किया? दिव्य नेत्र कर दिखा दिया। हमने कोई नाम नहीं दिया, न कोई पांच नाम, न सात नाम या द्वादश अक्षर, न कोई पाठ सिखाए, हमने तो ज्ञान करवाया कि जो माँ के गर्भ में भी सुमिरण करते थे, किस का ज्ञान करवाया? जो तुम्हारे भीतर पहले ही था। जो सन्देश पहले दिया था वो ही सन्देश बार-बार दे रहे हैं ताकि जीव की समझ में आ जाए, अपने प्रभु, ईश्वर, अल्ला, वाहगुरु, God, को पहचान जाओ, तुम कुछ कहो हमें कोई फर्क नहीं, परन्तु क्या पहचान जाओ कि परमात्मा तुम्हारे घट में है। क्या है? यह तुम कहना कि वाहगुरु है या ईश्वर है, अल्ला है या राम है, ओम है या हरि है, हमें कुछ नहीं कहना। हमें तो कहना है कि जिसे तू अलग-अलग नामों से बुलाता है वह तेरे अन्दर है।

अन्दर पहले और बाहर बाद में। शास्त्र पुकार-पुकार कर कह रहे हैं कि परमात्मा तेरे घट में है तू उसका ध्यान कर, पर तू पाठ करता है और जब श्री गुरु महाराज जी कृपा करके ज्ञान नेत्र खोल देते हैं फिर सभी ग्रन्थ-शास्त्र समझ में आने लग जाएंगे और तेरे अपने हो जाएंगे। इस के ऊपर गौर से सुनना, गा कर समझाया जाएगा, समझाने का तो लक्ष्य एक है।

**यह जग अन्धा बिना ज्ञान भटकिया बन्दा।  
मैं कही-2 समझाऊं इक दोई होए उन्हें समझाऊं।।**  
लोग पिछड़ गये हैं और पिछड़ते जा रहे हैं और पिछड़ते जाओगे। “यह दुनिया सराय चन्द रोज़ा, हर इक महमान होता है” सराय है यह दुनियां, इस कारण से इस में कुछ लाभ उठा जाओ, जीते जी

जान जाओ। हम तो जानने की बात कहते हैं, मानने को तो कहते ही नहीं। तुम मानते हो परमात्मा को, रब्ब को, ईश्वर को, तो भी अच्छी बात अगर नहीं मानते तो भी अच्छी बात। जो नहीं मानते उन्हें हम कहते है तुम मानो मत जानो और जो मानते हैं उन्हें भी हम कहते हैं कि तुम मानो मत, जानो। तो इस को समझो, ध्यान से सुनो—तुम्हें कुछ देने आए हैं, लेने कुछ नहीं आए। तुम्हें तो विचार करना है कि कभी किसी से कुछ माँगते नहीं और हमें भी कोई आवश्यकता भी नहीं। एक बार हमने नहीं कहा तुम भण्डारा करो, चन्दा दो या लाओ, अपने आप इकट्ठा करते हैं, धन भी अन्न भी—कोई झगड़ा कलेश नहीं, अपने आप बनाते हैं, खाते हैं, कोई आ जाए तो खिलाते हैं पर जहां तो सच्ची चीज़ खिलाई जाती है। जो थोड़ा सा भी खा गया उसका मजा नहीं छूटता। जो फिर सत्त पदार्थ खा गया, अमृत पी गया, आत्मा को खुराक खिला गया बस उसे फिर भूलता नहीं वो हटाने पर नहीं हटता, भीतर उसका पकड़ा जाता है। ऐसा शास्त्र भी कहते हैं तो उसी स्थिति को तुम भी समझो।

**राम भक्ति चिन्ता मणि सुन्दर,  
बसऊं गरूड़ उर जाके अन्तर।**

**परम प्रकाश रूप दिन राती,  
नहीं चाहिए कछु दिया घृत बाती।।**

“ज्ञान अन्जन गुरु दिया, अज्ञान अन्धेर विनास।  
हरि कृपा ते संत भेंटिया नानक मन प्रगास।।”

एक शायर ने भी फरमाया है कि:—  
ऐ मेरे सदगुरु तेरे दरबार पे नई चीज़ इक देखी।  
तुझे देते नहीं देखा मगर झोली भरी देखी।।

**परमेसर सूं गुरु बड़े गावत वेद पुराण।  
सहजो हरि के मुक्ति है, गुरु के घर भगवान।।**

**:भजन:**

**अन्तर जोत जगाई साधो, अन्तर जोत जगाई ।**

स्थूल इन्द्री की नहीं रसाई,  
सूक्ष्म इन्द्री पार न पाई ।  
तो पूरे गुरु की ली शरणाई,  
सूर्य भेद लखाई साधो ॥  
अन्तर जोत.....

सामवेद जब दास जो चाहे,  
तन मन अर्पे शीश चढाए ।  
अन्तर कीर्तन सहज समाए,  
अनहद नाद बजाई साधो ॥  
अन्तर जोत.....

सदग्रंथों का भेद जो दासा,  
आदि अन्त मध्य परगासा ।  
हस्त चींट नर देव समासा,  
हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख ईसाई ।  
सब में रहा समाई साधो,  
साचा नाम समाई ॥  
अन्तर जोत.....

घट-घट अमृत बहती धारा,  
पीवे प्रेमी गुरु का प्यारा ।  
पूर्ण ज्ञान का बजा नगारा,  
सब मिल आवो भाई मेरे ॥  
अन्तर जोत.....

सदगुरु अलख की महिमा भारी,  
ध्यान लगावें सब नर नारी ।  
ऋषि मुनि साधू ब्रह्मचारी,  
रहे विशेष आनन्द समाई ॥  
अन्तर जोत.....

प्रेमी सज्जनों एक बात अच्छी तरह जान  
लेनी चाहिए कि संसार में सब के सब प्राणी बंधे हुए  
हैं । क्षुदापूर्ति के लिए यानि पेट भरना सब के लिए

आवश्यक है चाहे वो राजा हो, रंक हो, फकीर हो,  
बहुत बड़ा अधिकारी या ऑफिसर हो या एक  
साधारण कर्मचारी हो परन्तु उदरपूर्ती का धन्धा सब  
के लिए आवश्यक है, कोई बाकी नहीं, कैसे भी करे,  
किन्हीं लोगों ने अपना उदरपूर्ती का धन्धा सुन्दर  
स्वच्छ ढंग से बना रखा है परन्तु कुछ ऐसे भी हैं जो  
छल कपट, परपंच करके या चोरी इत्यादि करके  
उदरपूर्ती करते हैं सबको करना पड़ रहा है ।

एक तरफ यह बात दूसरी तरफ यह भी  
निश्चित है कि कुछ यत्न चाहिए—यत्न का अर्थ दिल  
बहलावा या मन की शान्ति । मन तूफान खड़े करता  
है सहज बात है, कुदरती है, तुफान से मन में खड़े  
होते हैं, मन में अनेक प्रकार की चंचलताएं उठती हैं  
जैसे समुद्र में लहरें, कभी समुद्र के किनारे यदि खड़े  
हो कर देखोगे तो प्रतिक्षण लहरे उठ रही हैं । जो  
लहर उठी वह किनारे तक पहुंच रही है, शान्त हो  
जाती है, परन्तु यदि गिनना चाहे, शायद गिनी न  
जाएं कि कितनी लहरें उठीं, शायद ही कोई एक  
किनारे का गिन सकेगा पर ज्यादा नहीं लहरें बराबर  
उठती ही रहती हैं ।

जैसे सुमंद्र में लहरें उठती हैं, वैसे मन में भी  
उठती रहती हैं, कुछ न कुछ तरंगे उठती ही रहती हैं,  
कभी बुरी कभी भली जिस प्रकार की भी तरंगे उठती  
हैं, उन्हें दो भागों में बांट दिजिए—एक तो इस प्रकार  
से जैसे मान लिजिए शीशा है— शीशे पर (आयने)  
पर जो भी सामने आया वो चाहे काला, पीला, हरा,  
गन्दा या सुन्दर और मनुष्य या बन्दर कुछ भी हो, जो  
कुछ भी सामने आया उसने कैच कर लिया, पकड़  
लिया—जो पकड़ लिया वह रिकार्ड में आ गया ।  
इसी प्रकार से कहते हैं कि किसी Photographer ने  
किसी बहुत बड़े वजीर की किसी गलत दशा में  
Photo खींच ली है । बहुत कीमत अदा की जाने

लगी, परन्तु वह लाखों तक चला गया कि लाख रुपये से कम नहीं लूंगा, कुछ रूपयों सैंकड़ों, हजारों की बात नहीं एक लाख रूपया शायद दिया होगा कि नहीं दिया होगा कहने का अभिप्राय था कि अगर वह बात कईयों के सुनने में आई होती तो उसका कोई खास प्रमाण नहीं था परन्तु कैमरे ने फोटो कैच कर ली है, खेंच ली है, अपने भीतर रख ली है तो उस की अब वृहद कीमत पड़ रही है क्यों कि खेंच ली गई है।

खेंचना भी दो प्रकार का होता है:— दो प्रकार की तरंग चित्त पर आती है एक तो कुछ ख्याल ऐसे आए जिन की चित्त पर कोई याद्दाशत नहीं, कोई कहानी कोई घटना, मन में क्या ख्याल आए, क्या फुर्नाएं फुरी इन का कोई अनुमान नहीं, कोई गिनती नहीं पर कुछ ख्याल ऐसे हैं जो कि मन को चित्त को पकड़ कर बैठ जाते हैं। जो चित्त को, मन को पकड़ बैठ जाते हैं वह ख्याल चित्त में धारण हो गये हैं। उनका अब लेना देना हो गया है। जो निराकार ख्याल चित्त में आए थे वह साकार हो कर ही रहेंगे। उन में से कुछ तो इसी जन्म में भी हो सकते हैं और कुछ ख्याल ऐसे हैं जो कि अगले जन्मों के लिए रह जाते हैं, भोगते रहोगे—भोगते रहोगे—थकोगे नहीं, अगर थक भी जाओगे तो भी भोगने पड़ेंगे।

अक्सर बहुत लोगों का कहना है कि हमने कभी किसी का बुरा नहीं किया परन्तु हमें कष्ट-क्लेश क्यों भोगने पड़ रहे हैं, परन्तु वह यह नहीं जानते कि यह कष्ट न मालुम किस समय दिये थे। यह मांग न मालुम किस समय की गई थी पिछली इकट्ठी की गई मांगे चित्त के पटल पर धारण कर रखी है, वह मांगे सामने आ रही हैं, जो चाहा था, जो बोया था उसी को काट रहा है अब अगर इससे छूटना चाहता है तो बोना बन्द कर दे। अब न जाने

आप समझते हैं या नहीं कि बोना है क्या ? बीजना है क्या ? इस लिए फिर स्पष्ट कर रहे हैं कि एक तो वह ख्याल जो चित्त पर नहीं आए, नहीं चड़े और दूसरे वह ख्याल जिन को चित्त पकड़ कर बैठ गया है, जहां पर रुक गया है—रूप में, रंग में, रस में, स्त्री पति में, पुत्र पौत्र में, मित्र सम्बन्धी में, शत्रु में जिस में भी मन सहज से ही रुक गया वह मांग तो पूरी होगी ही, अब पूरी हो, या अगले जन्म में या और कभी। गुरवाणी में इस के लिए बहुत सुन्दर ढंग से समझाया है।

सोचे सोच न होवेई, जे सोची लख बार।  
भुखियां भुख न उतरई, जे बन्ना पुरियां भार।।

तेरे सोचने से जो कुछ तू सोचता है। वह होगा नहीं क्यों कि वह बोया जा रहा है, जैसा सोचता है, वैसा नहीं होगा क्यों कि बीज तो छोटा सा होता है और वह उगता है तो क्या से क्या बन जाता है, इसी प्रकार से वह कब जा कर मिलेगा जो अब सोच रहा है इसका अनुमान नहीं लगाया जा सकता, यदि वह सब कुछ जो तू मांग रहा है मिल भी जाए तो भी शान्ति नहीं, देश का राष्ट्रपति बन जाए, इन्द्र का राज भी मिल जाए यानि सारी पुरियां जितने भी लोक लोकान्तर हैं सारे के सारे भी बांध लेवे, सब का मालिक भी बन जाए तो भी शान्ति न मिलेगी—क्योंकि यह सब माया है जो दिखाई देता है इस में शान्ति है ही नहीं।

जो दीसे सो सगल बिनासै,

जो दीसे सो चालनहार।

सब कुछ जो दिखाई देता है अशान्त है तो जब जो कुछ बना सहज ही बिगड़ने जा रहा है। अब आवश्यकता इस बात की रहती है कि अगर चाहे किसी प्रकार से बोना बन्द कर दूं तो तेरे क्या बस की बात है। चित्त में, मन में, संकल्प खड़े न हों बोल तेरे

बस की बात है ? कभी देखा कि माला फेरते हो तो भी मन भटक रहा है, मन्त्र जपो तो भी भटक रहा है, तीर्थ चले जाओ, मन्दिर चले जाओ, गुरुद्वारे चले जाओ कोई भी शुभ से शुभ कर्म कर लो तो भी मन का भटकाव हटता नहीं, यदि कीर्तन भजन का थोड़ी देर के लिए कुछ रस लिया तो फिर खाली के खाली, उस में शायद मन न मालूम कहाँ का कहाँ हो, अब आवश्यकता इस बात की है कि मन कैसे रूके ? मन में बीज बोना कैसे हटे ? हे प्राणी ! यह जो मन में संकल्प और विकल्प उठते रहते हैं, फुर्नाएं फुर्ती रहती हैं, यह तुझे शान्त नहीं होने देतीं और यह बार-बार चौरासी में ले जाती हैं, बार-बार अनेक प्रकार की योनियों में ले जाती हैं, बार-बार इनके कारण भटकना होती है ।

हे प्राणी ! परम शान्ति चाहता है तो इससे अच्छा अवसर तुझे कभी मिलेगा नहीं, मनुष्य शरीर हो और मृत्यु लोक भी हो उस के बाद फिर ज्ञान दाता गुरु हो तो पूरे प्राणों से इच्छा करके संगत कर ले, संयम कर के बन्धन को समझ जा तो फिर बन्धन को खोलने की युक्ति खोजेगा तो तुझे पता चलेगा कि बन्धन कौन काट रहा है, जो साथ-साथ बन्धन को काटे तब तो सदगुरु हैं, अगर साथ-साथ बन्धन को नहीं काटा तो वह सदगुरु नहीं, बात को समझाने के लिए गुरबाणी कार ने इस के बारे में समझाया—



सारे शास्त्रों ने समझाया, तत्ववेत्ताओं ने समझाने के लिए एक ही बात कही कि बन्धन क्या, तू कहां से बंधा है, तेरा क्या बंधा है ? हाथ बंधे हैं कि पांव, दिखाई तो कुछ नहीं देता कैदखाने में बन्द कैदी तो दिखाई देता है, उसकी बेड़ी लगी भी दिखाई देती है पर तेरे को किस ने बांधा, तू कैसे बंधा, तू कब से बंधा, किससे बंधा, बेड़ी तेरे को नहीं बंधी है, रस्सा तेरे को नहीं और कोई जंजीर तेरे को नहीं, हाथी को तो जंजीर से जकड़ा जाता है पर तू कैसे बंधा है, क्यों तुझे जन्मना पड़ता है, क्यों मरना पड़ता है, तुमने देखा होगा कि बूढ़े होकर कितना दुःख भोगते हैं, कई-कई बूढ़े तो बहुत ही प्रकार के कष्ट उठाते हैं जीवित ही नर्क सा बन जाता है, बूढ़े की हालत तो कोई दूसरा बूढ़ा ही जाने, भला युवा क्या जाने कि बुढ़ापा क्या होता है, उसे कैसे बैठना उठना पड़ता है— कैसे नींद आती है और क्या हजम होता है । वृद्ध की हालत तो कोई वृद्ध ही जाने, परन्तु युवा अवस्था में यह नहीं समझता, हे प्राणी ! यदि कोई चाहे कि बूढ़ा होकर भक्ति कर लूंगा, ध्यान धर लूंगा, भजन कर लूंगा, तो इस संशय में न रहना ।

अगर कोई बाल्यकाल से सत्य मार्ग को उतरे वह कल्याण को जा रहा है, बाल्यकाल से यदि कोई ध्यान की अवस्था को खोजे तो ही कुछ पायेगा, दुनियां का काम भी कर जो तुझे कार्य करने पड़ रहे हैं, छोड़ कर जाने से भी कुछ काम नहीं चलेगा, जरूरत तो ज्ञान की है, अगर घर बार छोड़ भी दिया तो उस से फर्क नहीं पड़ेगा, जरूरत तो ध्यान की ध्यान तो मन ने करना है ।



## मानुष जन्म की मौज

लख चौरासी भरमदियां, पौ पर अटका आए।  
अब के जो पौ न फटे, तो फिर चौरासी जाए।।

मन जब तक ज्ञानी नहीं, मन को बोध  
नहीं तब तक वह रटता भी है, कहता भी है  
परन्तु वह ध्यान न हुआ यह तो पढ़ा है, गाया है,

जरूरत तो जीवन को  
बदलने की विचार  
करने से बुढ़ापा समझ  
में आए और बुढ़ापे  
के बाद फिर मुक्ति  
होती है। इस पर भी  
विचार करना चाहिए  
कि जो आज तेरे घर  
में जन्मा है, जिस की  
खुशी मनाई जा रही  
है, मिठाई बांटी जा



रही है और गाया जा रहा है, वह एक दिन जाता भी  
है। यह यहां से आया है वहां पर बड़े दुख व शोक  
मनाये जा रहे हैं, और यहां पर बड़े हर्ष, उल्लास  
और आनन्द मनाये जा रहे हैं, तो इसी प्रकार से तेरे  
साथ भी है, तुझे कहीं जाना है और जा कर और  
कहीं न कहीं जन्म लेना है, फिर चौरासी:—

लख चौरासी भरमदियां, दुर्लभ जन्म पायो।  
नानक नाम संभाल तूं, सो दिन नेड़े आयो।।  
लख चौरासी भरमदियां, पौ पर अटका आए।  
अब के जो पौ न फटे, तो फिर चौरासी जाए।।

आ कर चार लख चौरासी,  
भरमत यह जीव अविनाशी।

फिरत सदा माया के प्रेरे,  
काल स्वभाव कर्म गुण घेरे।।

चौरासी लाख योनियों में जीव को भटकना पड़ता है,

और माया की प्रेरणा से माया जैसे भटकाती है, वैसे  
ही इसे नाचना पड़ता है। समय चल रहा है, चलता  
आ रहा है, न मालुम कब तक चलेगा, चित्त का, मन  
का, ख्याल का, जो तेरा स्वभाव है, जो तेरी इच्छाएं  
हैं, वो जिधर को लिए जा रही हैं। एक समय की  
बात है।

एक  
आदमी  
ऊंट के  
ऊपर  
सवार  
था।।  
ऊंट की  
नकेल  
वाली  
रस्सी  
टूट गई,

आधी नीचे को लटक गई और आधी हाथ में रह  
गई यानि नकेल का कनैक्शन टूट गया जिससे वह  
ऊंट को कन्ट्रोल करता है, अब ऊंट ज्यादा तेजी से  
जा रहा था। किसी ने पूछा भाई इतनी तेज कहां जा  
रहे हो, तुझे कहां जाना है? कहने लगा कुछ पता  
नहीं कहां जाना है। अब तो जहां यह ले जाएगा,  
क्योंकि नकेल तो टूट गई है। अब ऊंट जिधर भी ले  
जाए, हे प्राणी अब ऊंट न मालुम किधर ले जाए  
कुछ पता नहीं, क्योंकि नकेल तो हाथ से छूट गई है।

ठीक इसी प्रकार से समझ मन रूपी ऊंट की  
तेरे हाथ से डोर छूटी हुई है, नकेल छूटी हुई है, मन  
चाहे क्या कर ले, चाहे भी तो मन को रोक नहीं  
सकता तुम रोक कर देख लेना तुम एक बार गायत्री  
कहो मन सत्रह बार माहिलपुर का चक्कर काट लेगा।  
लंदन, अमेरिका, अफ्रीका और जो देखा दिल्ली,

बम्बई और जो सुना मन न मालूम कहां-कहां भाग जाएगा, क्या-क्या करेगा तो इस प्रकार कहते हैं, मन रूपी ऊंट की नकेल तो टूटी हुई है, और अब मन चंचल है भाग रहा है। यह बीज बोया जा रहा है, कभी देखा तुमने जो काट रहा है, और बीज बोया जा रहा है। कभी-कभी दुखी होकर कहते हो, “हाय-हाय इससे तो अच्छा होता न ही होता, इस से तो मर जाते तो अच्छा था।” इतना भी नहीं सोचता कि मर कर क्या होगा-क्या मरा? महान्पुरुषों ने नक्शा खींचा है:—

**माया मरी न मन मरा, मर-मर गये शरीर ।  
आशा तृष्णा न मरी, कह गये दास कबीर ।।**

कहते हैं आशा नहीं मरी न ही तृष्णाएं मरी वासनाएं भी नहीं मरी और शरीर मर भी गया तो क्या खास फर्क पड़ जाएगा, शरीर तो कपड़ा है, जरा तूं ही बता कि जीवन में कितने कपड़े उतारे हैं। अगर किसी से पूछा जाय कितनी उम्र है और वह कहे चालीस वर्ष और फिर पूछा जाए कि भाई तूने आज तक कितने कुर्ते या Shirts पहन-पहन कर उतारी हैं तो शायद कोई बता नहीं सकेगा। क्योंकि गिनती ही नहीं रखता, जरूरत ही नहीं समझता इस बात की, इतना जरूर समझता है कि मैं कुर्ता नहीं, बनियान नहीं पैंट नहीं परन्तु यह नहीं समझता कि मैं काया नहीं। कहता सदा यही है कि मैं काया हूं, मैं शरीर हूं, फलां मेरा नाम है, फलां मेरे पिता हैं, फलां मेरी माता है, फलां देश का रहने वाला हूं, फलां जाति में जन्मा, फलां वर्ष में उत्पन्न हुआ था इतनी आयु है। शरीर की आयु खोज रहा है, शरीर को मैं-मैं कह रहा है, बड़े आश्चर्य की बात है कि न तो कभी किसी का शरीर रहा और अब दिखाई दे रहा है कि रहना नहीं नाश है, नाश की तरफ को दिनों दिन जा रहा है। जैसा पहले देखा था, वैसे अब नहीं, यानि

स्थिर नहीं एक रस नहीं, एक रस नहीं रहता। सिर्फ इतना ही नहीं बाल्यकाल था। फिर जवानी आई, ऐसे भाग कर कहीं जवानी नहीं आई, यानि बदलाहट—ऐसे भाग कर कहीं बुढ़ापा नहीं आ गया, हर रोज बदलता है, प्रति क्षण बदलता है, एक-एक सैकिण्ड में बदलता रहता है। हालतें बदलते रहती हैं, मोटा, पतला, ऊंचा और छोटा होता जाता है। कमजोर या हुष्ट पुष्ट बदलाहट होती रहती है।

जिसकी बदलाहट होती रहती है उसको तूं मैं-मैं कह रहा है और जिस के लिए कहा जा रहा है कि और भी कोई खास चीज़ है, कोई शरीरी भी है, शरीरी मतलब जिसने शरीर धारण किया है। उस को यदि समझ लेवे तो तेरा झगड़ा कुछ समाप्त हो जाये। बिना उसको समझे कभी जीवन में झगड़ा खत्म होने का नहीं न बन्धन का पता लगा कि अब मैं करूं क्या? बांधा हुआ जिस प्रकार से मार लगती है उस प्रकार से मार खा के बके जा रहा है, ठीक इसी प्रकार से हे प्राणी! पर वश हुआ है स्व वश हो जा, पूरा गुरू मिले तो यह सारा नक्शा समझावे फिर उसको सत्संग कहते हैं, सत्त वचन, पूर्ण वचन समझना चाहे समझ कर अपनी गांठ खोलनी चाहे, अपने भीतर की गांठ खोलने की आप इच्छा करे तब जाकर कहीं कल्याण है, इसलिए हमारे कहने का अभिप्राय है कि यह गांठ समझने की बड़ी जरूरत है, आज समझो या फिर समझो या किसी जन्म में समझो पर बिना समझे गांठ खोलने या खुलने का प्रश्न ही नहीं और बराबर दुःख उठाता रहेगा।

इस लिए प्रश्न यह था कि चित्त कैसे पकड़ा जाए, मन कहां टिकाएं, मन कहां लगाएं, मन किस में लगायें, मन कैसे रूके, मन कैसे टिके, यह ज्ञान, युक्ति, योग, भेद जो जाननहारा है उसे तत्ववेत्ता कहते हैं, तत्व यानि सार, सार यानि सबका सार, वेत्ता यानि



जानने वाला, जो तत्वेत्ता है, जो निरबन्ध है और यह निरबन्धता के विषय में समझा सकता है पर किसको? जागे कोई समझने के लिए तैयार हो जब तक आगे कोई समझने के लिए तैयार न हो तो चतुर्मुखी ब्रह्मा जी भी चारों मुखों से ज्ञान चर्चा करें, प्रकाश डालें तो भी तेरी मुक्ति न होगी छूटना न होगा—किसी भी सृष्टि में। जीव नाच नाचता है, गुरवाणी कार ने इस का बहुत सुन्दर ढंग से नक्शा खींचा है।

पहले नक्शे को समझो और जो उस से छूटने का उपाय बताया है उस का भी समझो नाच तो तुम लोगों ने बहुत से देखे होंगे उनमें से एक प्रकार का नाच ज्यादा से ज्यादा देखा होगा—क्या? जीव पेट के लिए नाच रहा है, पद-पोस्ट के लिए नाच रहा है, बन्दर को भी नचाया जा रहा है, जंजीर खींची जाती है इसी तरह प्राणी को भी नचाया जा रहा है। बन्दर को कोई मनुष्य नचाता दिखाई दे रहा है परन्तु मनुष्य को बन्दर की भांति कौन नचा रहा है, वो दिखाई नहीं देता, वो नचा कौन रहा है? उसकी वासना जो उसकी खुद की बोई हुई है। इसी लिए कहा भी गया है कि:—

**“कबहूँ नृत्य करे बहु भांत”**

कभी यह जीव नृत्य करता है, नृत्य से तात्पर्य है नाचना है, तरह-तरह से नाच नाचता है लेकिन पेट के लिए। नृत्य मीरां बाई ने भी किया क्योंकि उसको ज्ञान के दाता सद्गुरु मिल गये थे और वो जो नृत्य था वो सांवरे को जानने के लिए, उसको रिझाने के लिए और चित्त मगन होकर किया। जैसे कहा गया है:—

**कबहूँ नृत्य करे बहु भांत, कबहूँ सोये रहे दिन रात**

किसी जीवन में तो नृत्य करता रहता है और नाचता ही रहता है और कोई ऐसा भी जन्म धारण करता है कि सोया है, हर प्रकार से सोया है, मन से,

चित्त से, बुद्धि से सब से सोया है, जीवन में और कुछ नहीं सुनता, सुनाए भी नहीं सुनता, बहरा सा हो गया है। कुछ बात पल्ले नहीं पड़ती, विषय वासनाओं की घोर निद्रा, लोभ के कारण, मोह के कारण, अज्ञान क कारण सोया हुआ है जितना भी कोई जगाए परन्तु जागता नहीं और कभी ऐसी स्थिति में चला जाता है।

**“ कबहूँ महां क्रोध विकाल ”**

क्रोध में उतर जाता है। एक होता है क्रोध और एक होता है क्रोधी, क्रोध यानि गुस्सा, गुस्सा क्या, और अब? जो दिल की, मन की इच्छा है पूरी न हो, जैसे चाहता है अब वह चाहना गलत है या ठीक, यह पाप है या पुण्य, वह उत्तम है या अनुत्तम जैसा चाहता है अगर वैसा मेल न मिले तो गुस्सा यानि क्रोधि आता है, उस क्रोध के लिए वह दूसरों को जिम्मेवार ठहराता है, इसने ऐसा नहीं किया, बैसा नहीं किया, बात नहीं मानी तो क्रोध तो क्रोध का कारण दूसरे को समझता है परन्तु हे प्राणी क्रोध का कारण भी तू है, अगर क्रोध को न समझा और यही क्रोध और बढ़ते-बढ़ते विक्राल रूप धारण कर जाता है, और फिर क्रोधी हो जाता है। पहले तो क्रोध था दो, चार, दस बार क्रोध किया बस वह फिर क्रोधी हो गया, कपड़े फाड़ने को, लड़ने झगड़ने को, अपने आपे को पीट लेने को, कुएं में छलांग लगाना, गाड़ी के नीचे सिर देने तक के लिए तैयार है, न मालूम क्या से क्या कर बैठे पर हे प्राणी! क्रोध आया कहां से, सोया क्यों था नाच क्यों रहा था। सबका एक ही उत्तर है—तेरी वासना। तो कहते हैं:—

**कबहूँ होय बहै बड़ राजा।**

**कबहूँ भिखारी नीच का साजा।।**

कभी बड़ा भारी राजा बन बैठता है राजा बन कर तप

किए थे, प्रमात्मा के लिए नहीं, भोगों के संग्रह के लिए, भोग वासनाओं के लिए बड़े-बड़े तप किये तो राजा बन गया, ऊंचा पद पा गया। ऊंचा पद पा गया तो वह भी वासना, कभी राजा बन कर बैठता है तो कभी-कभी यश में और अपकीर्ति यानि कुयश में उतर गया, लोग क्या कह रहे हैं कोई परवाह नहीं अपनी कुआदत में, अपनी गन्दगी में अपनी वासना में दिन रात मस्त है, किसी के समझाने से भी नहीं हटता, बड़े-बड़े कष्ट भले ही उठा रहा है क्योंकि न मालूम कहां से कहां उतर गया यह सब चित्त के पटल के कारण है महापुरुषों ने तो पहले से ही नक्शा खींच कर रखा है ताकि कोई जीव समझे, और समझ कर अपना कल्याण करे, आगे कहते हैं:—

**“कबहूँ होय पण्डित करे बखान।”**

कभी पण्डित बन कर बखान करता है, पण्डित से तात्पर्य है जो पिंड में रहने वाली आत्मा का प्रेमी है, जो आत्मा को जानता है, जो आत्मा का ध्यान करता है। आत्मा का पता ही नहीं, आत्मा की सुध कहां से आये, पण्डित का तात्पर्य क्या? कुछ पढ़ा किसी का गाया हुआ गाया और जो पढ़ा वह बोलने लग गया, व्याख्यान करने लग गया मुंह से कह डाला,

एक समय की बात है कोई राजा था, उसके पास कोई मछली ले गया और कहने लगा यह मछली बनावटी नहीं। इसमें खास विशेषता है एक तिनखा उठाकर मछली के कान में डाला वह तिनखा दूसरे कान से निकल गया, दुबारा फिर तिनखा मछली के कान में डाला और वह मुंह से निकल गया तो इसी प्रकार से जीव की हालत है कि जो कुछ पढ़ा या सुना, एक कान से सुना और दूसरे कान से निकल गया जो पढ़ा वह भी निकल गया कोई अर्थ नहीं, इस प्रकार से जो भी पढ़ा सुना वह मुंह से कह डाला

वह पण्डित बना है, जो उसको बना हुआ पण्डित या कथा वाचक कहते हैं, यदि उससे पूछ बैठोगे कि क्या? तो वह समझा नहीं पाएगा क्यों कि जानता नहीं, मानता है। सिन्दरी की बात है, एक कथा वाचक ने सुनाया:—

**न तद्भासयते सूर्यो न शशाङ्को न पावकः।  
यद्गत्वान निवर्तन्ते तद्भाम परमं मम॥**

एक सज्जन प्रोग्राम के बाद हाथ जोड़कर कहने लगे कि मुझे इसका ज्ञान कराओ मैं बहुत दुखी हूँ, चित्त चंचल है, चित्त पापी है। जब वैराग जागे तो फिर उस समय कोई ज्ञानी गुरु चाहिए उस के बिना काम नहीं चलता जब बहुत बातें हो चुकीं तो उसने कहा साक्षात्कार कराओ तो कथा वाचक कहने लगा मैंने तो पढ़ कर सुनाया है जानता नहीं, क्यों? जहां साक्षात् की बात है तो फिर वहां पर गुरु नहीं है, तो वह अपनी बात पर टिकेगा नहीं, गा भले ही लेते हैं।

**पूरे गुरु का सुन उपदेश, पारब्रह्म निकट कर भेख।**

गीता में भी ऐसा ही प्रमाण है कि तत्व-दर्शियों की शरण में जा यानि निकट में बैठ, संग कर, सतसंग सुन जिस से तत्व यानि मर्म या सार का पता चले। वास्तविक ज्ञानी है बस गुरु हो गये हैं, कोई सात नाम रटाये कोई चौबीस अक्षर रटाये कोई गायत्री मंत्र देवे इससे काम नहीं चलेगा, गायत्री मंत्र तो दिया पर भर्गों का ज्ञान, भर्गों का प्रकाश नहीं कराया इसी लिए कहते हैं:—

**कहता तो बहुत मिले, गहता मिले न कोई।  
वां कहता को जान दे, जो नहीं गहता होय॥**

**जो जानत तेई देई जनाई,**

**जानत तुमहिं तुमहीं हो जाई।**

बातूनी का काम नहीं। सिर देवे तो कुछ पायेगा।

तत् सत् हरि ॐ

# Dhammapada

To be cont....

**Anikkasavo kasavam yo vattham paridahissati  
apeto damasaccena na so kasavamarahati. 1  
Yo ca vantakasav'assa, silesu susamahito  
upeto damasaccena, sa ve kasavamarahati. 2**

Verse 9: He who is not free from taints of moral defilements (kilesas) and yet dons the yellow robe, who lacks restraint in his senses and (speaks not the) truth is unworthy of the yellow robe.

Verse 10: He who has discarded all moral defilements (kilesas), who is established in moral precepts, is endowed with restraint and (speaks the) truth is, indeed, worthy of the yellow robe.

1). kasavam or kasavam vattham: the yellow or reddish yellow robe donned by members of the Buddhist Religious Order. There is a play on words in the above stanzas; 'anikkasavo', meaning, not free from faults of moral defilements and therefore, stained; and kasavam, the yellow robe, dyed sombre in some astringent juice and is therefore stained.

2). vantakasav'assa: lit., has vomited all moral defilements; it means, has discarded all moral defilements through the four Path Knowledge (Magga nana).

## **The Story of Devadatta:-**

While residing at the Jetavana monastery in Savatthi, the Buddha uttered Verses (9) and (10) of this book, with reference to Devadatta.

Once the two Chief Disciples, the Venerable Sariputta and the Venerable

Maha Moggallana, went from Savatthi to Rajagaha. There, the people of Rajagaha invited them, with their one thousand followers, to a morning meal. On that occasion someone handed over a piece of cloth, worth one hundred thousand, to the organizers of the alms-giving ceremony. He instructed them to dispose of it and use the proceeds for the ceremony should there be any shortage of funds, or if there were no such shortage, to offer it to anyone of the bhikkhus they thought fit. It so happened that there was no shortage of anything and the cloth was to be offered to one of the theas. Since the two Chief Disciples visited Rajagaha only occasionally, the cloth was offered to Devadatta, who was a permanent resident of Rajagaha.

Devadatta promptly made the cloth into robes and moved about pompously, wearing them. Then, a certain bhikkhu from Rajagaha came to Savatthi to pay homage to the Buddha, and told him about Devadatta and the robe, made out of cloth worth one hundred thousand. The Buddha then said that it was not the first time that Devadatta was wearing robes that he did not deserve. The Buddha then related the following story.

Devadatta was an elephant hunter in one of his previous existences. At that time, in a certain forest, there lived a large number of elephants. One day, the hunter noticed that these elephants knelt down to the paccekabuddhas on seeing them. Having observed that, the hunter stole an upper part of a yellow robe and covered his body and hand with it. Then, holding a spear in his hand, he waited for the elephants on their usual route. The elephants came, and taking him for a paccekabuddha fell down on their knees to pay obeisance. They easily fell prey to the hunter. Thus, one by one, he killed the last elephant in the row each day for many days.

The Bodhisatta (the Buddha-to-be) was then the leader of the herd. Noticing the dwindling number of his followers he decided to investigate and followed his herd at the end of the line. He was alert, and was therefore able to evade the spear. He caught hold of the hunter in his trunk and was about to dash him against the ground, when he saw the yellow robe. Seeing the yellow robe, he desisted and spared the life of the hunter.

The hunter was rebuked for trying to kill under cover of the yellow robe and for committing such an act of depravity. The hunter clearly did not deserve to put on the yellow robe.

**To Be Continued.....**



## अलख होम्यो क्लीनिक



सब दुख औषध प्रभू को नाम। देही में ताका विश्राम ॥

जन्म-जन्म के रोग नसाहिं। श्रद्धा संग जो अनुपानाहिं ॥

भगवद प्रेमी जी,

मानव जीवन में व्यक्ति का जुड़ाव सबसे ज्यादा जिससे रहा है वह है शरीर। इसकी रक्षा हेतु व्यक्ति क्या से क्या तक छोड़ देता है, क्या से क्या कर देता है। परन्तु वास्तविकता को फिर भी समझ नहीं पाता कि इस शरीर को माध्यम बनाकर तुझे प्रभू धाम की यात्रा करनी है। इसका सदुपयोग करते हुए, इसका स्वास्थ्य बनाए रखते हुए इससे प्रभु भक्ति में काम लेना है। जब दुरुपयोग से शरीर छिन्न-भिन्न, रोगी हो जाए तो व्यक्ति पूर्णतः सब कुछ गंवा बैठता है। अनेकानेक रोग आन घेरते हैं।

ऐसी स्थिति में जीव को स्वास्थ्य लाभ हो और उसका समय परमात्म भजन की तरफ लगे उसके लिए श्री सदगुरु देव जी कृपा रूप अलख होम्यो औषधालय का संचालन प्रारंभ हुआ है। जिसका लक्ष्य है सरल, सस्ता, सुस्पष्ट रोगोन्मूलन। समय— सोमवार से शुक्रवार

प्रातः..... 10 से 01 बजे तक।

दोपहर.....03 से 06 बजे तक ॥

पता:

अलख अमर विवेचन प्रत्यक्षालय सिद्ध झण्डी  
आश्रम माहिलपुर।

**परोपकार वचन मन काया संत स्वभाव सहज खगराया ॥**

## ਗੁਰੂ ਵਚਨ ਦਾ ਵਿਚਾਰ

**ਜਿਉ ਅੰਧੋਂ ਕਾ ਹਾਥੀਆ ਸਭ ਕਾਹੂ ਕੋ ਗਿਆਨ ।  
ਅਪਣੀ-ਕਹਤ ਹੈ ਕਿਸ ਪੇ ਧਰੀਏ ਧਿਆਨ ॥**

ਇੱਕ ਬਾਰ ਕਿਸੇ ਰਾਹ ਤੇ ਚਾਰ ਅੰਨ੍ਹੇ ਜਾ ਰਹੇ ਸਨ। ਉਹਨਾਂ ਦੇ ਸਾਹਮਣੇ ਤੋਂ ਇੱਕ ਹਾਥੀ ਆ ਰਿਹਾ ਸੀ ਜਿਸ ਤੇ ਇੱਕ ਮਹਾਵਤ ਸਵਾਰ ਸੀ। ਅੰਨ੍ਹਿਆਂ ਨੂੰ ਰਾਹ ਟਟੋਲਦਾ ਵੇਖ ਕੇ ਮਹਾਵਤ ਨੇ ਚੀਕ ਕੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਸੂਰਦਾਸੋ ਪਿੱਛੇ ਹਟ ਜਾਉ। ਹਾਥੀ ਆ ਰਿਹਾ ਹੈ। ਕੁੱਝ ਰੋਲਾ ਰੱਪਾ ਸੁਣ ਕੇ ਅੰਨ੍ਹੇ ਹਟ ਤਾਂ ਗਏ ਪਰ ਨਾਲ ਹੀ ਉਹਨਾਂ ਵੀ ਰੋਲਾ ਪਾ ਕੇ ਕਿਹਾ, “ਭਾਈ ਰੋਕ ਲੈ ਅਸੀਂ ਵੀ ਹਾਥੀ ਦੇਖਣਾ ਚਾਹੁੰਦੇ ਹਾਂ।” ਇਹ ਸ਼ਬਦ ਮਹਾਵਤ ਨੂੰ ਅਜੀਬ ਤਾਂ ਲੱਗੇ ਪਰ ਉਸ ਨੇ ਆਖਿਆ, “ਠੀਕ ਹੈ! ਕਰ ਲਵੋ ਚਾਅ ਪੂਰਾ।”

ਫੇਰ ਕੀ ਸੀ, ਚਾਰੇ ਸੂਰਦਾਸ ਹਾਥੀ ਦੇ ਆਲੇ ਦੁਆਲੇ ਘੁੰਮਣ ਲੱਗ ਪਏ ਅਤੇ ਬਾਰੀ-ਬਾਰੀ ਫੂਹ ਕੇ ਦੇਖਣ ਲੱਗੇ। ਇੱਕ ਨੇ ਪੁੰਛ ਨੂੰ, ਦੂਜੇ ਨੇ ਲੱਤਾਂ ਨੂੰ, ਤੀਜੇ ਨੇ ਸੁੰਢ ਨੂੰ ਅਤੇ ਚੌਥੇ ਨੇ ਢਿੱਡ ਨੂੰ ਫੂਹ ਕੇ ਵੇਖਿਆ। ਇਸ ਮਗਰੋਂ ਮਹਾਵਤ ਤਾਂ ਹਾਥੀ ਲੈ ਕੇ ਚਲਦਾ ਬਣਿਆ ਪਰ ਅੰਨ੍ਹਿਆਂ ਆਪਣਾ ਗਿਆਨ ਬਘਾਰਨਾ ਸ਼ੁਰੂ ਕਰ ਦਿੱਤਾ। ਪੁੰਛ ਨੂੰ ਟੋਹ ਕੇ ਵੇਖਣ ਵਾਲੇ ਨੇ ਆਖਿਆ, “ਦੇਖੋ ਜੀ! ਅੱਖਾਂ ਤਾਂ ਸਾਡੀਆਂ ਭਾਵੇਂ ਠੀਕ ਠਾਕ ਹੀ ਹਨ ਪਰ ਹਾਥੀ ਤਾਂ ਅੱਜ ਅਸੀਂ ਵੀ ਦੇਖ ਲਿਆ। ਐਂਵੇਂ ਲੋਕ ਗੱਪਾਂ ਮਾਰਦੇ ਹਨ ਕਿ ਹਾਥੀ ਬਹੁਤ ਵੱਡਾ ਹੁੰਦਾ ਹੈ ਪਰ ਹਾਥੀ ਤਾਂ ਇੱਕ ਝਾੜੂ ਦੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਹੈ।” ਇੰਨੀ ਦੇਰ ਨੂੰ ਲੱਤਾਂ ਨੂੰ ਟੋਹਣ ਵਾਲਾ ਬੋਲ ਪਿਆ, “ਨਹੀਂ ਐ ਨਹੀਂ, ਹਾਥੀ ਤਾਂ ਪਿੱਲਰ ਵਾਂਗ ਹੁੰਦਾ ਹੈ।” ਵਿੱਚ ਹੀ ਤੀਜਾ ਬੋਲ ਓਠਿਆ, “ਰਹੇ ਨ ਅੰਨ੍ਹੇ ਦੇ ਅੰਨ੍ਹੇ, ਹਾਥੀ ਤਾਂ ਪਾਈਪ ਦੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਸੱਭ ਦੀ ਸੁਣ ਕੇ ਚੌਥਾ ਆਖਣ ਲੱਗਾ, “ਹਾਥੀ ਤਾਂ ਯਾਰੋ ਟੈਕੀ ਦੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਹੁੰਦਾ ਹੈ।

ਕੁੱਝ ਐਸੀ ਹਾਲਤ ਹੈ ਬੁੱਧੀਹੀਨ ਜੀਵ ਦੀ ਜੋ ਸ਼ਾਸਤਾਂ ਦੇ ਵਚਨਾਂ ਨੂੰ, ਗੁਰੂ ਵਚਨਾਂ ਨੂੰ ਆਪਣੇ ਹਿਸਾਬ ਨਾਲ ਸਮਝਣਾ ਚਾਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਜੀਵ ਭੁੱਲ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ਕਿ ਜੇਕਰ ਗੁਰੂ ਵਚਨ ਨੂੰ, ਗੁਰੂ ਆਗਿਆ ਨੂੰ

ਸਮਝਣਾ ਹੈ ਤਾਂ ਉਸਦੀ ਸਮਝ ਵੀ ਗੁਰੂ ਮਹਾਰਾਜ ਤੋਂ ਲੈਣੀ ਪਵੇਗੀ।

**ਗੁਰੂ ਕੀ ਮਤਿ ਤੂੰ ਲੈ ਇਆਣੇ ।**

**ਭਗਤੀ ਬਿਨ ਡੂਬੇ ਸਭੀ ਸਿਆਣੇ ॥**

ਤੇਰੀ ਆਪਣੀ ਸਿਆਣਪ ਕੰਮ ਨਹੀਂ ਆਉਂਦੀ। ਗੁਰੂ ਵਚਨ ਨੂੰ ਸਮਝਣ ਲਈ ਜ਼ਰੂਰਤ ਪੈਂਦੀ ਹੈ ਸੰਗਤ ਦੀ, ਸ਼ਰਧਾ ਦੀ ਅਤੇ ਵਿਚਾਰ ਦੀ। ਇਸ ਦਾ ਕਾਰਣ ਇਹ ਹੈ ਕਿ ਗੁਰੂ ਵਚਨ ਸਭ ਦੇ ਲਈ ਇੱਕ ਸਮਾਨ ਨਹੀਂ ਹੁੰਦਾ। ਸਭਾ ਦੇ ਵਿੱਚ ਕਿਹਾ ਹੋਇਆ ਵਚਨ ਵੀ ਸਭ ਦੇ ਲਈ ਬਰਾਬਰ ਨਹੀਂ। ਉਸੇ ਵਚਨ ਦਾ ਅਰਥ ਇੱਕ ਲਈ ਹੋਰ ਹੈ ਅਤੇ ਦੂਜੇ ਦੇ ਲਈ ਹੋਰ ਹੋ ਸਕਦਾ ਹੈ ਪਰ ਜੀਵ ਜਦੋਂ ਅਰਥ ਆਪਣੀ ਬੁੱਧੀ ਅਤੇ ਸੋਚ ਮੁਤਾਬਿਕ ਲਗਾਉਂਦਾ ਹੈ ਉਦੋਂ ਹੀ ਵਚਨ ਤੇ ਵਿਵੇਕ ਖਤਮ ਹੋ ਜਾਂਦਾ ਹੈ।

ਇੱਕ ਬਾਰ ਦੀ ਗੱਲ ਹੈ। ਸ਼੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਮਹਾਰਾਜ ਜੀ ਨੇ ਪਰਵਚਨ ਕਰਦਿਆਂ ਆਖਿਆ, “ਜਿਸ ਤਰਾਂ ਗੋਤਾਖੋਰ, ਪਾਣੀ ਦੀ ਘੁੰਮਣ ਘੇਰੀ ਵਿੱਚ ਉਲਝ ਜਾਣ ਤੇ ਆਪਣਾ ਸ਼ਰੀਰ ਢਿੱਲਾ ਛੱਡ ਦੇਵੇ ਤਾਂ ਉਹ ਡੁਬਦਾ ਨਹੀਂ ਬੱਚ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ਉਸੇ ਤਰਾਂ ਜਦੋਂ ਜੀਵ ਦੁਨਿਆਵੀ ਝੰਝਟਾਂ ਵਿੱਚ ਉਲਝ ਜਾਵੇ ਤਾਂ ਉਸਨੂੰ ਹਰ ਪਾਸਿਓਂ ਚਿੱਤ ਨੂੰ ਹਟਾ ਕੇ ਪਰਮਾਤਮਾ ਵੱਲ ਨੂੰ ਮੋੜ ਦੇਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ। ਜਿਸ ਨਾਲ ਜੀਵ ਮਾਇਆ ਵਿੱਚ ਅਟਕਦਾ ਨਹੀਂ ਸਗੋਂ ਇਸ ਤੋਂ ਤਰ ਜਾਂਉਂਦਾ ਹੈ।

ਇਹ ਵਚਨ ਸੁਣ ਕੇ ਇੱਕ ਭਗਤ ਜਦੋਂ ਘਰ ਪਹੁੰਚਿਆ ਤਾਂ ਉਸਨੂੰ ਉਸਦੇ ਬੱਚੇ ਨੇ ਪੁਛਿਆ, “ਪਿਤਾ ਜੀ! ਅੱਜ ਤੁਸੀਂ ਸਤਿਸੰਗ ਵਿੱਚ ਕੀ ਸੁਣਿਆ?” ਤਾਂ ਬਾਪ ਨੇ ਕਿਹਾ, “ਗੁਰੂ ਮਹਾਰਾਜ ਜੀ ਨੇ ਦੱਸਿਆ ਹੈ ਕਿ ਗੋਤਾਖੋਰ ਘੁੰਮਣ ਘੇਰੀ ਵਿੱਚ ਨਹੀਂ ਫਸਦਾ ਕਿਉਂਕਿ ਖਵਾਜਾ ਦੇਵਤਾ ਬਹੁਤ ਬਲਵਾਨ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਖਵਾਜਾ ਦੇਵਤਾ ਗੋਤਾਖੋਰ ਨੂੰ ਡੁੱਬਣ ਨਹੀਂ ਦਿੰਦਾ।” ਜਦੋਂ ਇਹ ਗੱਲ ਗੁਰੂ ਮਹਾਰਾਜ ਜੀ ਨੂੰ ਪਤਾ ਲੱਗੀ ਤਾਂ ਗੁਰੂ ਮਹਾਰਾਜ ਜੀ ਬਹੁਤ ਹੱਸੇ ਅਤੇ ਉਹਨਾਂ ਫਰਮਾਇਆ, “ਇਹ ਜੀਵ ਦੇ ਬੱਸ ਦੀ ਗੱਲ ਨਹੀਂ। ਜੀਵ ਜਦੋਂ ਵੀ ਗੁਰੂ ਮਹਾਰਾਜ ਜੀ ਦੇ ਵਚਨ ਸੁਣਦਾ

ਹੈ ਤਾਂ ਆਪਣੀ ਬੁੱਧੀ ਦੇ ਅਰਥ ਨਾਲ ਹੀ ਲਗਾਉਂਦਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਆਪਣੇ ਅਰਥਾਂ ਨਾਲ ਜਦੋਂ ਗੁਰੂ ਬਚਨਾਂ ਨੂੰ ਜੀਵ ਬੰਨਦਾ ਹੈ ਤਾਂ ਉਸਨੂੰ ਕੁੱਝ ਹੋਰ ਹੀ ਸਮਝ ਆਉਂਦਾ ਹੈ।

ਇਸ ਕਰਕੇ ਗੁਰੂ ਵਚਨ ਨੂੰ ਇਵੇਂ ਹੀ ਨਾਲ ਸਮਝਿਆ ਜਾਵੇ ਜਿਸ ਤਰੀਕੇ ਨਾਲ ਗਾਂ ਪਹਿਲਾਂ ਚਾਰਾ ਖਾਉਂਦੀ ਹੈ ਫੇਰ ਹੌਲੀ-ਹੌਲੀ ਜੁਗਾਲੀ ਕਰਦੀ ਹੈ ਉਸੇ ਤਰ੍ਹਾਂ ਜੀਵ ਨੂੰ ਪਹਿਲਾਂ ਗੁਰੂ ਵਚਨ ਸੁਣਨੇ ਚਾਹੀਦੇ ਹਨ।

**ਗੁਰੂ ਕੇ ਵਚਨ ਸੁਣੇ ਮਨ ਐਸੇ।**

**ਜਿਓਂ ਕਪਿਲਾ ਆਹਾਰੇ ਤੈਸੇ।**

ਸੁਣਨ ਤੋਂ ਬਾਦ ਜੀਵ ਨੂੰ ਇੱਕ-ਇੱਕ ਵਚਨ ਇੰਝ ਵਿਚਾਰ ਕਰਨਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ ਜਿਵੇਂ ਗਾਂ ਜੁਗਾਲੀ ਕਰਦੀ ਹੈ। ਭਾਵ ਕਿ ਇੱਕ-ਇੱਕ ਵਚਨ ਨੂੰ ਭਜਨ ਸੁਮਿਰਣ ਚ ਉੱਤਰ ਕੇ ਵਿਚਾਰਨਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ। ਬੁੱਧੀ ਦੇ, ਮਨ ਨੇ ਦਿੱਤੇ ਹੋਏ ਫੈਸਲੇ ਹਮੇਸ਼ਾ ਹੀ ਸੰਸਾਰ ਵੱਲ ਨੂੰ ਧੱਕਦੇ ਹਨ ਪਰ ਭਗਵਾਨ ਸ੍ਰੀ ਕ੍ਰਿਸ਼ਨ ਦਾ ਵਚਨ ਹੈ।

**ਤਸਮਾਤਸਰਵੇਸੂ ਕਾਲੇਸੂ ਮਾਮਨਸਮਰਯੁਧ ਚ।**

**ਮਯੀ ਅਰਪਿਤ ਮਨੋਰਬੁਧੀਰਮਾਮ ਵੈਸ਼ਯਸਯ ਸੰਸਯਮ ॥**

ਸ੍ਰੀ ਭਗਵਾਨ ਫਰਮਾਉਂਦੇ ਹਨ ਕਿ ਹੇ ਅਰਜੁਨ। ਤੂੰ ਹਰ ਵੇਲੇ ਮੇਰਾ ਸੁਮਰਣ ਕਰ, ਮੇਰੀ ਯਾਦ ਕਰ। ਪਰ ਯਾਦ ਕਿਵੇਂ? ਕਿ ਮਨ ਅਤੇ ਬੁੱਧੀ ਮੇਰੇ ਅਰਪਣ ਕਰ ਭਾਵ ਇਹ ਦੋਵੇਂ ਸ਼ਕਤੀਆਂ ਮੈਨੂੰ ਸੌਂਪ ਦੇ। ਜਦੋਂ ਮਨ, ਬੁੱਧੀ ਪਰਮਾਤਮਾ ਦੇ ਅਰਪਣ ਕਰਕੇ ਸੁਮਰਣ ਕਰੇਗਾ ਤਾਂ ਹੇ ਪ੍ਰੇਮੀ! ਵਿਚਾਰ ਪਰਮਾਤਮਾ ਦੇ ਵਿੱਚੋਂ ਹੀ ਉਤਪੰਨ ਹੋਣਗੇ ਅਤੇ ਐਸਾ ਵਿਚਾਰ

**ਗੁਰੂ ਕਾ ਵਚਨ ਉਲਾਂਘ ਕੇ ਜੋ ਸ਼ਿੱਸ਼ ਕਹੀਂ ਭੀ ਜਾਏ। ਜਹਾਂ ਜਾਏ ਤਹਾਂ ਕਾਲ ਹੈ ਕਹੇਂ ਕਬੀਰ ਸਮਝਾਏ ॥**

**ਗੁਰੂ ਕਾ ਵਚਨ ਜਾ ਕੇ ਮਨ ਵਸਿਆ। ਰੋਮ-ਰੋਮ ਅਮ੍ਰਿਤ ਰਸ ਰਸਿਆ ॥**

ਕਦੇ ਮਾਇਆ ਵਿੱਚ ਡੋਬੇਗਾ ਨਹੀਂ ਸਗੋਂ ਪਰਮਾਤਮਾ ਦੇ ਵੱਲ ਨੂੰ ਮੋੜੇਗਾ। ਸ਼ਾਸਤਰ ਦਾ ਵਚਨ ਹੈ ਕਿ—

**ਗੁਰੂ ਕੀ ਮੂਰਤ ਮਨ ਮੇਂ ਧਿਆਨ।**

**ਗੁਰੂ ਕੇ ਸ਼ਬਦ ਮੰਤਰ ਮਨ ਮਾਨਿ ॥**

ਗੁਰੂ ਮੂਰਤ ਦਾ ਅਰਥ ਗੁਰੂ ਮਹਾਰਾਜ ਦਾ ਸ਼ਰੀਰ ਨਹੀਂ, ਚੇਹਰਾ ਨਹੀਂ, ਬਲਕਿ ਗੁਰੂ ਮਹਾਰਾਜ ਦਾ ਭਾਵ ਹੈ ਨਾਮ ਗੁਰੂ ਮੂਰਤ ਦਾ ਭਾਵ ਹੈ ਅਵਿਨਾਸ਼ੀ ਸਤਿ ਸਰੂਪ ਜੋ ਹਰ ਜੀਵ ਦੇ ਅੰਦਰ ਵਿਰਾਜਮਾਨ ਹੈ। ਕੋਈ ਵੀ ਐਸਾ ਨਹੀਂ ਜੋ ਉਸ ਸਤਿ ਸਰੂਪ ਤੋਂ ਬਿਨਾਂ ਜੀਵਿਤ ਰਹਿ ਸਕੇ। ਗੁਰੂ ਮੂਰਤ ਹਰ ਜੀਵ ਦਾ ਆਸਰਾ ਹੈ ਉਸੇ ਤਰ੍ਹਾਂ ਹੈ ਗੁਰੂ ਮਹਾਰਾਜ ਜੀ ਦਾ ਵਚਨ। ਜਿਸ ਨੂੰ ਸ਼ਾਸਤਰ ਮੰਤਰ ਦਾ ਮਹਤੱਵ ਦਿੰਦੇ ਨੇ। ਮੰਤਰ ਦਾ ਅਰਥ ਹੁੰਦਾ ਹੈ ਜਿਸ ਨਾਲ ਮਨ ਤਰ ਜਾਵੇ, ਇਸ ਸੰਸਾਰ ਚੱਕਰ ਤੋਂ ਛੁੱਟ ਜਾਵੇ। ਗੁਰੂ ਵਚਨ ਨੂੰ ਮੰਤਰ ਇਸ ਕਰਕੇ ਕਿਹਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ਕਿਉਂਕਿ ਗੁਰੂ ਵਚਨ ਹੀ ਹੈ ਜਿਸ ਨਾਲ ਮਨ ਮੁੜਦਾ ਹੈ, ਜਿਸ ਨਾਲ ਮਨ ਮਰਦਾ ਹੈ। ਕਈ ਪ੍ਰਕਾਰ ਦੇ ਯਤਨ-ਤਰੀਕੇ ਮਨ ਨੂੰ ਮੋੜਨ ਵਿੱਚ ਅਸਮਰਥ ਹਨ। ਪੁੰਨ-ਦਾਨ, ਪੂਜਾ-ਪਾਠ, ਧਰਮ-ਕਰਮ ਜਿੱਥੇ ਇਹ ਸਭ ਮਾਰਗ ਮਨ ਨੂੰ ਮੋੜਨ, ਪਰਮਾਤਮਾ ਦੀ ਪ੍ਰਾਪਤੀ ਵਿੱਚ ਥੋਥੇ ਸਾਬਤ ਹੁੰਦੇ ਹਨ ਉੱਥੇ ਇੱਕ ਗੁਰੂ ਦਾ ਵਚਨ ਹੀ ਕਲਿਆਣ-ਕਾਰੀ ਸਾਬਤ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਰਾਮਾਇਣ ਦਾ ਵਚਨ ਹੈ—

**ਗੁਰੂ ਕੇ ਵਚਨ ਪ੍ਰਤੀਤਿ ਨਾ ਜੇਹੀ।**

**ਸੁਪਨੇਹੂੰ ਸੁੱਖ ਸਮਰਿੱਧੀ ਨ ਤੇਹੀ ॥**

ਜਿਸ ਨੂੰ ਗੁਰੂ ਵਚਨ ਤੇ ਵਿਸ਼ਵਾਸ ਨਹੀਂ ਉਸ ਨੂੰ ਸੁਪਨੇ ਵਿੱਚ ਵੀ ਸੁੱਖ-ਸਮਰਿੱਧੀ ਨਹੀਂ, ਉਸ ਨੂੰ ਕਦੇ ਨਾਮ ਦੀ ਸਮਝ ਨਹੀਂ ਪੈਂਦੀ।



“ ਗਫਲਤ ਕੀ ਨਿਦ੍ਰਾ ਸੇ ਜਾਗੋ ”



इस वक्त ही कुछ विचार कर ले, फेर बेला नहीं हृथ आवणे दा ॥  
टुटा शीशा न कारीगर जोड़ सकै, भजया मोती न फेर गंढावने दा ॥  
डिगा फल न डाली दे नाल जुड़दा, फिटिया दुध न फेर जमावणे दा ॥  
सब संत पुकारदे साईं लोका. एहो बेला ई रब्ब दे पावन दा ॥





## स्वस्थ जीवन की कला



आजकल फास्ट फूड और विरोधी आहार का खाने का फैशन चल रहा है स्वास्थ्य रहे या न रहे हम जीभ की गुलामी नहीं छोड़ेंगे। बीमार पड़े और डॉक्टर घर में खड़े। इससे जो ओवर फूड, ओवर नाइट न खाने का डर था वह भी निकल गया। इससे यंग इण्डिया को वोल्ड और ओल्ड इण्डिया बनने में देर नहीं लगेगी। जिसका सबसे बड़ा उदाहरण मैगी में छुपे जहरीले शरीर घातक रसायन हैं सरकार तो जाग्रत है। पर हम लोग जाग्रत नहीं होंगे तब तक स्वस्थ भारत का सपना देखना काल्पनिक सा लगता है।

आयुर्वेद में प्रकृति और ऋतु के अनुसार आहार का संतुलन और समन्वय सटीक बताया गया है क्योंकि विरुद्ध आहार से सफेद चमड़ी, एलर्जी, सोराइसिस, लैपरोसी आदि चमड़ी रोग फूट पड़ते हैं। मनुष्य असमंजस में पड़ जाता है कि ऐसा रोग मुझे किस कारण से हुआ है परन्तु आप अपनी अंतर आत्मा से पूछ कर देखे तो उत्तर मिल जायेगा। उत्तर होगा विरुद्ध आहार संबंध आयुर्वेद में निम्नलिखित बातों से स्पष्ट किया गया है:—

1. दूध के साथ प्याज खाना हानिकर विरुद्ध आहार है
2. दूध और दही समान मात्रा में मिलाकर न लें।
3. प्याज मिली खिचड़ी और दूध विरुद्ध आहार है।
4. मांस, अण्डा, मछली भी दूध के साथ कभी न लें।
5. तिल और गुड़ भी एक साथ में लेना हानिकारक है।
6. गुड़ और दही समान भाग में लेना अहितकर है।
7. दही के साथ गुड़, केला, लहसुन प्याज नहीं लेना चाहिए।
8. मिल्क शेक भी शतप्रतिशत हानिकर है।
9. दही, छाछ, नींबू, कच्चा आम, कढ़ी टमाटर जैसी खाद्य वस्तुएं दूध के साथ न ली जाएं तो अच्छा है।

10. सिरका, आव अविलेह दूध के साथ लेने से हानि होती है।
11. शहद और घी एक साथ समान मात्रा में लेना अहितकर हैं।

### आहार और आरोग्य

1. रात्रि का भोजन सोने से तीन घंटे पहले कर लेना चाहिए।
2. खाने वाले सभी धान्य रसायन मुक्त और जीव जन्तु मुक्त साफ सुथरे और उत्तम गुणवत्ता के होने चाहिए।
3. सभी प्रकार के आहार को अच्छी तरह से चबाकर खाये।
4. आहार के वजन पर नहीं आहार के पाचन पर ध्यान रखें।
5. कुल भोजन का दशांक भाग पानी या छाछ तुरन्त ले सकते हैं। शेष आधा घंटा के बाद पीने से पाचन क्रिया में सहायक सिद्ध होता है। और स्वास्थ्यवर्धक है।
6. दिन का भोजन समयबद्ध और ऋतु सम्यक होना चाहिए।
7. प्रमाणिक सत्य है कि तले से अच्छा उबला और उबला से भुना हुआ आहार स्वास्थ्यवर्धक होता है।
8. टी.बी., मोबाईल, मस्करी, मस्ती, चिन्ता, क्रोध, भय आदि में न तो भोजन करें और न टी.बी. देखें।
9. अच्छा भोजन, अच्छी कसरत, अच्छा भजन, अच्छी हवा और सूर्य का प्रकाश, दिनचर्या में सम्मिलित अवश्य करें।
10. सुगठित शरीर, सुन्दर शरीर और कौटिल्य बुद्धि के लिए पोषण युक्त, सुरक्षात्मक प्राकृतिक आहार लेना चाहिए।
11. भोजन करने के बाद बज्रासन, हल्का टहलना या दायें, बायें और सीधे, लेटना आदि पाचन में सहायक क्रियाओं को करना चाहिए।

### दीर्घाय नुस्खा

प्राकृतिक आहार, विहार, और मल त्याग से मेघा बुद्धि बढ़ती है। पवित्रता आती है दरिद्रता और दुख का नाश होता है। अर्थात् भोजन, श्रद्धा, मित्रता, श्रद्धा, विश्वास, प्रसन्नता और निस्वार्थ जन सेवा दीर्घायु के लिए टॉनिक है।

साभार स्व० जी०



# त्रिदशक अलखादेश मासिक पत्रिका

दे सत्त संदेशा जगत को करे नित्त-नित्त ज्ञान प्रसार।

तीन दशक पूरे किये श्री अलख आदेश ब्रह्म सार॥

अलखादेश मासिक पत्रिका के 30 वर्ष होने की उपलब्धि पर आगामी अप्रैल मास की 24 तारीख को त्रिदशक मनाया जा रहा है। जिस सुअवसर पर A.A.V.P आश्रम माहिलपुर में एक महान सत्संग का कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है।

## कार्यक्रम समय

सांय.....04 से 6:30 बजे तक।

नोट:— अप्रैल मास की पत्रिका 24 अप्रैल को ही मिलेगी।



## सत्संग सूचनाएं



- 20 मार्च 2016 **प्रार्थी** : लेख राज । **प्रवचन** : स्वामी विशेषानंद जी ।  
**स्थान** : गुरुद्वारा श्री गुरु रविदास जी हरदासपुर नज़दीक लवली प्रोफेशनल युनिवर्सिटी ।
- 03 अप्रैल 2016 **प्रार्थी** : मुनीश शर्मा । **प्रवचन** : स्वामी विशेषानंद जी ।  
**स्थान**— भगवान दास जंझ घर, चांदनी चौक नज़दीक Deputy Mayor Residence, PNB 2।  
वाली गली, स्लेम टावरी, जालंधर बाई पास, लुधियाना । **समय** : प्रातः 11:00 से 02:00 तक ।
- 24 अप्रैल 2016 **प्रार्थी** : शाखा सबार । **प्रवचन** : स्वामी विशेषानंद जी ।  
**स्थान** : सरकारी हाई स्कूल सबार तहसील बसोहली जिला कटुआ । **समय** : प्रातः 10:00 से 11:00 तक ।

